# संजीवनी बना मप्र का पहला मदर मिल्क बैंक

- निहारिका दुबे

भोपाल के जयप्रकाश चिकित्सालय में आरंभ हुआ मध्यप्रदेश का पहला आधुनिकतम और पूर्ण सुविधायुक्त शासकीय मदर मिल्क बैंक, मां के दूध के अभाव में दम तोड़ने वाले नवजातों के लिए संजीवनी साबित हो रहा है। भोपाल को देश का पहला ऐसा जिला मुख्यालय होने का गौरव हासिल हुआ है जहां 'मदर मिल्क बैंक' की स्थापना की गई है। देश के कतिपय बड़े महानगरों में ही सरकार की मदद से ऐसे बैंक चल रहे हैं। केन्द्र हो अथवा राज्यों की सरकारें - हरेक स्तर पर मातृ और शिशु मृत्यु दर की रोकथाम के लिए अनेक प्रभावी कदम निरंतर उठाये जा रहे हैं। मध्यप्रदेश राज्य ने भी हाल ही में इस दिशा में एक बड़ा कदम आगे बढ़ाया है। राज्य की कमलनाथ सरकार के सानिध्य में बीती छह अगस्त को भोपाल के जयप्रकाश चिकित्सालय में 'क्रास मदर मिल्क बैंक'की शुरूआत हुई है।

मदर मिल्क बैंक शुरू होने के बाद अगस्त माह से लेकर 30 सितंबर 2019 तक के शिशु मृत्यु दर के जो आंकड़े जयप्रकाश अस्पताल में सामने आये हैं, वह उत्साह बढ़ाने वाले माने जा सकते हैं। दरअसल पिछले सालों और इस साल जनवरी से लेकर जुलाई तक के शिशु मृत्यु दर के आंकड़ों की तुलना में अगस्त माह में इस अस्पताल में शिशुओं की मौतों के आंकड़े में अपेक्षानुसार गिरावट दर्ज हुई। सितंबर माह में शिशु मृत्यु दर का आंकड़ा और भी नीचे आया।

बैंक शुरू होने के बाद स्वेच्छा से मिल्क डोनेट करने वाली माताओं की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। अधिकारिक सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार सितंबर माह में दान में मिलने वाले मदर मिल्क का आंकड़ा 15 सौ मिलीलीटर को पार कर गया। डोनेट हुए दूध में अधिकांश भाग उन नवजातों को वितरित किया गया, जिनकी माताएं जन्म देने के बाद दुनिया से चल बसीं थीं। काफी संख्या में ऐसे बच्चों को भी डोनेट दूध दिया गया, जिन्हें जन्म लेने के बाद किन्ही कारणों से उनकी माताओं ने लावारिस हालत में छोड़ दिया था। क्रास मदर मिल्क बैंक से वितरित किये गये दूध ने नवजातों को एक तरह से 'नया जीवन' प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। दान में मिले मां के दूध का सेवन करने से नवजातों में जहां तमाम रोगों से लड़ने की क्षमता पैदा हुई, वहीं जरूरी खुराक भी उन्हें मिल पायी।

दरअसल जयप्रकाश चिकित्सालय में स्थापित क्रास मदर मिल्क बैंक में दान में मिले मदर मिल्क को सहज कर रखने की बेहद उत्तम व्यवस्था है। दान में मिलने वाले मदर मिल्क बैंक को तमाम माइक्रो-बॉयोलॉजिलकल जांच के बाद प्रिजर्व किया जाता है। इस प्रक्रिया से गुजरने के बाद लंबे वक्त तक - दान में मिले मां के दूध को सहज कर रखा जा सकता है। सहज कर रखे जाने वाले ऐसे दूध में तमाम गुणवत्तामूलक तत्व बने रहते हैं। ऐसे मदर मिल्क को जरूरतमंद नवजातों को कुछ समय बाद भी दिया जाये तो भी वह बच्चे के लिए उतना ही फायदेमंद होता है, जितना कि तत्काल दिये जाने पर उत्तम होता है।

मां के दूध के अनेक फायदे हैं। माँ का दूध नवजात शिशु के कोमल अंगों तथा पाचन क्रिया के अनुरूप प्रकृति द्वारा निर्मित होता है। इसमें बच्चे की जरुरत के सभी पोषक तत्व उचित मात्रा में होते हैं। इन्हें शिशु आसानी से हजम कर लेता है। माँ के दूध में मौजूद प्रोटीन और वसा गाय के दूध की तुलना में भी अधिक आसानी से पच जाता है। इससे शिशु के पेट में गैस बनने, कब्ज, दस्त आदि होने या दूध उलटने की सम्भावना बहुत कम होती है। माँ का दूध नुकसान करने वाले माइक्रो ऑर्गनिज्म को नष्ट करके आँतो में लाभदायक तत्वों की वृद्धि करता है।

माँ के दूध में शिशु की जरूरत के हिसाब से परिवर्तन होते रहते हैं। दिन में, रात में, कुछ सप्ताह में और कुछ महीनों में शिशु को पोषक तत्वों की जरूरत बदल जाती है। उसी के अनुसार माँ के दूध में भी बदलाव अपने आप हो जाते हैं। स्तनपान करने से शिशु को एलर्जी नहीं होती है। खान-पान में बदलाव के अनुसार माँ के दूध के स्वाद या गंध में परिवर्तन हो सकता है, लेकिन यह एलर्जी का कारण या नुकसान का कारण नहीं होता है। जबकि अन्य प्रकार के दूध या आहार से शिशु एलर्जी का शिकार हो सकता है। स्तनपान करने और मां का दूध पीने वाले बच्चों की प्रतिरोधक क्षमता तुलनात्मक रूप से अधिक होती है। माँ का दूध उन्हें सर्दी, जुकाम, खांसी या अन्य संक्रमण से बचाने में सहायक होता है। अन्य प्रकार की बीमारी की सम्भावना भी स्तनपान करने वाले शिशुओं में कम होती है।

मध्यप्रदेश सरकार ने भोपाल के बाद इंदौर और ग्वालियर जिला मुख्यालयों पर भी ऐसे ही मदर मिल्क बैंकों की शुरूआत कर दी है। यद्यपि अभी वे भोपाल के जयप्रकाश चिकित्सालय समान क्षमता वाले नहीं है। भविष्य में इंदौर और ग्वालियर के क्रास मदर मिल्क बैंकों को भी राज्य का स्वास्थ्य महकमा क्षमतावान बना देने वाला है। तमाम सुविधाएं और संसाधन इन बैंकों को भी मुहैया कराने का सैद्धांतिक निर्णय सरकार ले चुकी है। आवश्यक बजट की व्यवस्था भी सरकार ने कर दी है। सरकार का लक्ष्य सुस्पष्ट है। वह चाहती है हर सूरत में शिशु मृत्यु दर नियंत्रित होना चाहिये। विशेषकर मां के दूध के अभाव में होने वाली मौतें सरकार को कतई मंजूर नहीं है।

सही भी है विज्ञान ने जबरस्त तरक्की की है। हरेक रोग से लड़ने के लिए नित-नए प्रयोग हो रहे हैं। असाध्य रोगों से लड़ने के लिए निरंतर नवीन तकनीकें आ रही हैं। आज जब कैंसर जैसा रोग असाध्य नहीं रहा है। ऐसी सूरत में केवल और केवल, मां के दूध के अभाव में नवाजत - असमय ही काल के गाल में समा जायें – इसे, ना तो समाज मंजूर करता है और ना ही शासन-प्रशासन और सरकारें। बर्दाश्त किया भी नहीं जाना चाहिए। लड़कर ही जीत मिल सकती है।

हमारे मध्यप्रदेश ने भी इस दिशा (हार नहीं मानेंगे) में महत्वपूर्ण कदम बढ़ा दिया है। आरंभ में ही जो नतीजे देखने को मिल रहे हैं - उन्हें प्रयासों की सफलता माना जायेगा। जयप्रकाश चिकित्सालय स्थित 'क्रास मदर मिल्क बैंक'की प्रमुख डॉक्टर शोभा खोत कहती हैं, 'मदर मिल्क बैंक में डोनेट होने वाले मदर मिल्क से 22 प्रतिशत तक की कमी नवजात शिशुओं की असामयिक मृत्यु की दर में एक समय के बाद दर्ज होगी।' फिलहाल अकेले जयप्रकाश चिकित्सालय में एक से डेढ़ लीटर मदर मिल्क की हर दिन जरूरत होती है। बैंक की स्थापना के बाद से 'अमृत कलश' (मदर मिल्क बैंक) खाली नहीं रह रहा है। हर दिन 15 से 20 माताएं मिल्क डोनेट करने के लिए आगे आ रही हैं। दर्जनों ऐसे नवजातों को इस दूध को उपलब्ध कराया गया, जिन्हें मां के दूध की जरूरत थी।

मदर मिल्क बैंक सभी 365 दिन यह बैंक काम करता है। बताते हैं बैंक की शुरूआत बहुत अच्छी है। आने वाले दिनों में मिल्क डोनेट करने वाली माताओं की संख्या बढ़ेगी। स्वयं होकर माताएं इस नेक काम के लिए आगे आयी हैं। बैंक के पास एक वक्त में 10 से 15 माताओं से मिल्क दान में लेने की क्षमता वाले सभी इक्यूमेंट हैं। दान में मिलने वाले मदर मिल्क को पाश्च्युराइज और कीटाणुमुक्त करने की भी समस्त व्यवस्था है। जैसे-जैसे दानदाता माताएं आगे आयेंगी, वैसे-वैसे जयप्रकाश चिकित्सालय के इस बैंक का विस्तार करते चले जायेंगे।

मध्यप्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री तुलसी सिलावट भी बैंक की स्थापना से बेहद खुश हैं। उनकी प्रसन्नता की मूल वजह बैंक को मिल रहे रिस्पांस और शिशु मृत्यु दर में दर्ज हुई कमी है। वे कहते हैं, 'स्वास्थ्य विभाग की कोशिश इस बैंक के जरिये भोपाल के अन्य उन सरकारी अस्पतालों में जन्म लेने के बाद अनाथ हो जाने वाले या फिर समाज के भय से मां या उनके परिजनों द्वारा पैदा होते ही बच्चों को लावारिस हालात में छोड़ देने वाले ऐसे कमजोर एवं मां के दूध की आवश्यकता महसूस करने वाले हरेक बच्चे को भी जयप्रकाश अस्पताल के मदर मिल्क

बैंक के जरिये बचाने का प्रयास किया जायेगा। भविष्य में जेपी हास्पिटल ऐसे बच्चों को मदर मिल्क उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास करेगा।

वास्तव में प्रयास बेहतर है। विचार नेक है। चूंकि भोपाल के साथ ही इंदौर और ग्वालियर में भी क्रास मदर मिल्क बैंक आकार ले चुका है। भोपाल में तो इसने गति भी पकड़ ली है। ऐसे में उम्मीद की नई किरण स्पष्ट नजर आने लगी है। बहुत शीघ्र हमारा मध्यप्रदेश भी शिशु मृत्यु दर में कमी लाकर देश के ऐसे राज्यों की पांत में ऊपर आकर खड़ा हो जाने वाला है, जिन सूबों में शिशु मृत्यु दर बहुत कम अथवा ना के बराबर है।

(प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)

नोट: मनुज फीचर सर्विस में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।